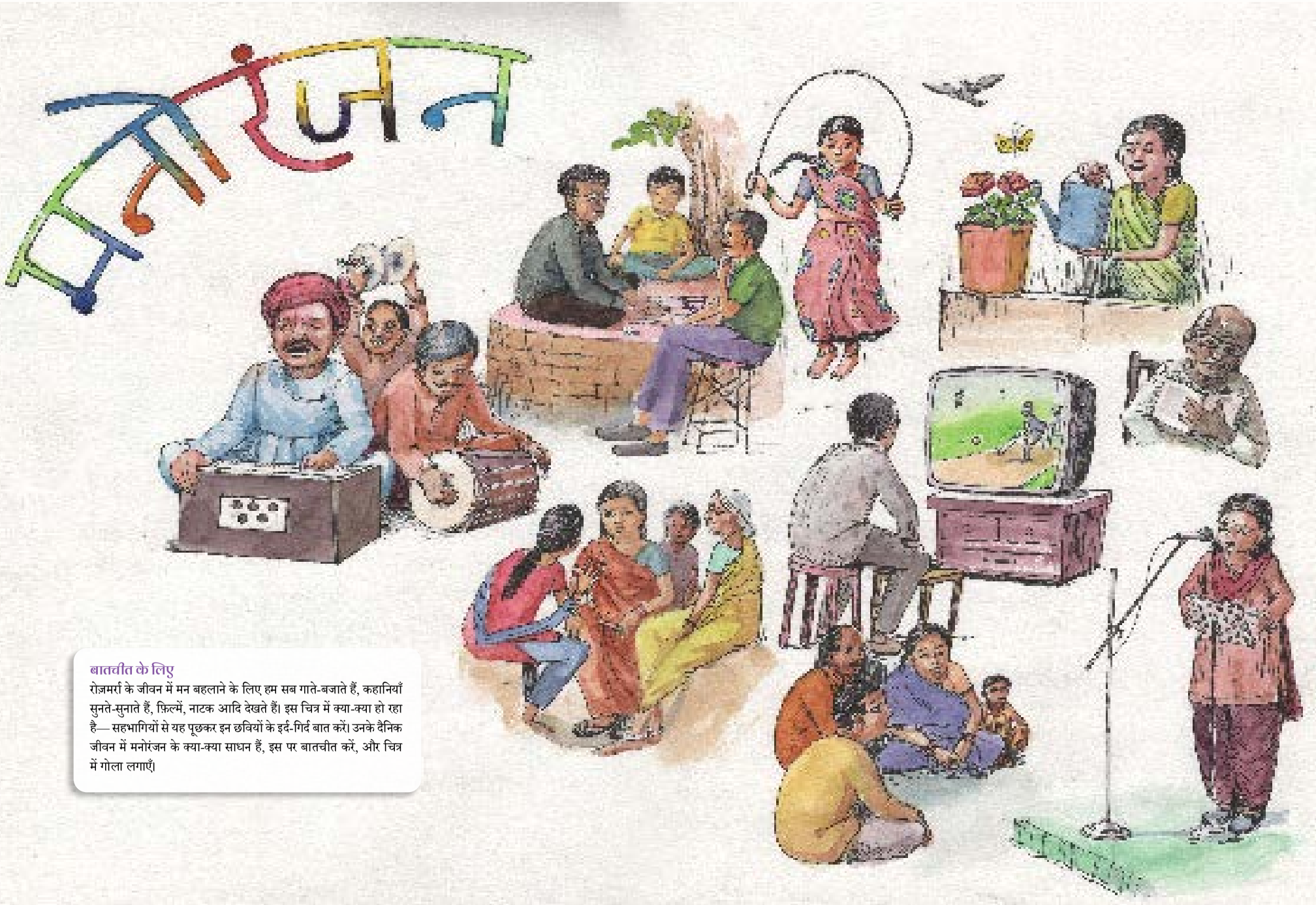

बातचीत के लिए

रोज़मर्रा के जीवन में मन बहलाने के लिए हम सब गाते-बजाते हैं, कहानियाँ सुनते-सुनाते हैं, फ़िल्में, नाटक आदि देखते हैं। इस चित्र में क्या-क्या हो रहा है— सहभागियों से यह पूछकर इन छवियों के इर्द-गिर्द बात करें। उनके दैनिक जीवन में मनोरंजन के क्या-क्या साधन हैं, इस पर बातचीत करें, और चित्र में गोला लगाएँ।

11 मनोरंजन

हम सीखेंगे

- मनोरंजन के विभिन्न साधनों के बारे में जानना

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। लेकिन घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन बोली, "खाना है तो जाना है।"

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे।"

लाभुबेन बोली, "हाँ। पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।"

भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। मगर नारियल खाने के लिए जी ललचा रहा था। वे लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ।"

भीखूभाई बाज़ार निकल पड़े। बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई देखते-पूछते, नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" - भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में, काका।"

भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, "दो रुपए! दाम बहुत ज़्यादा है, एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना।"

भीखूभाई बड़बड़ाते हुए बोले, "तो बताओ, एक रुपए में कहाँ मिलेगा?"

नारियलवाले ने कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर एक मंडी है। शायद वहाँ मिल जाए।"

भीखूभाई मंडी की तरफ चल पड़े।

मंडी में लोगों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

भीखूभाई ने माथे का पसीना पोंछा। इधर-उधर देखा। फिर एक नारियलवाले से पूछा- "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?"

"सिर्फ़ एक रुपया, काका," - नारियलवाले ने जवाब दिया।

भीखूभाई ने कहा, "मैं इतनी दूर से आया हूँ। पचास पैसे काफ़ी हैं।"

नारियलवाले ने साफ़ मना कर दिया और कहा, "बंदरगाह पर चले जाओ, शायद वहाँ तुम्हें पचास पैसे में मिल जाए।"

भीखूभाई पैरों को घसीटते हुए चलने लगे। सागर के किनारे एक नाववाला बैठा था।

"अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?"- भीखूभाई ने पूछा।

"काका, केवल पचास पैसे"- नाववाले ने कहा। भीखूभाई ने कहा, "इतनी दूर से पैदल आया हूँ और तुम कहते हो पचास पैसे? मैं तुम्हें पच्चीस पैसे दूँगा।" भीखूभाई झुककर नारियल उठाने ही वाले थे कि नाववाले ने कहा, "नारियल नीचे रख दो।"

फिर उसने भीखूभाई की ओर देखा और बोला, "सस्ते में चाहिए? नारियल के बगीचे में चले जाओ।"

भीखूभाई नारियल के बगीचे में पहुँच गए। बगीचे के माली से नारियल का

दाम पूछा। माली ने कहा, “पच्चीस पैसे का एक।”

“पच्चीस पैसे? जूते घिस गए, पैर थक गए और अब पैसे भी देने पड़ेंगे? नारियल मुफ़्त में ही दे दो।” – भीखू भाई ने कहा।

माली ने कहा, “यह रहा पेड़ और वह रहा नारियल। जितने चाहो तोड़ लो।”

भीखूभाई तो खुशी से फूले न समाए। वे झटपट पेड़ पर चढ़ गए।

उन्होंने सबसे बड़े नारियल को तोड़ने के लिए दोनों हाथ आगे बढ़ाए। उज़्ज़्क! पैर फिसल गए। भीखूभाई ने एकदम से नारियल को पकड़ लिया। उनके दोनों पैर हवा में झूलते रह गए। वे मदद के लिए चिल्लाने लगे। “अरे भाई! मदद

करो,” उन्होंने नीचे खड़े माली से विनती की। माली ने कहा, “वो मेरा काम नहीं, काका। यह तुम्हारे और तुम्हारे नारियल के बीच का मामला है। पैसे नहीं, खरीदना नहीं, बेचना नहीं, और मदद नहीं। सब कुछ मुफ़्त!”

तभी ऊँट पर सवार एक आदमी वहाँ से गुज़रा। भीखूभाई ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगे, “ओ ऊँटवाले! मेरे पैर वापस पेड़ पर टिका दो न, बड़ी मेहरबानी होगी।”

ऊँटवाले ने ऊँट की पीठ पर खड़े होकर भीखूभाई के पैरों को पकड़ लिया। ठीक उसी समय ऊँट को हरे-हरे पत्ते नज़र आए। पत्ते खाने के लालच में ऊँट अपनी जगह से हट गया। बस, वह आदमी ऊँट की पीठ से फिसल गया। अपनी जान बचाने के लिए उसने भीखूभाई के पैरों को कसकर पकड़ लिया। अब दोनों क्या करते? इतने में एक घुड़सवार आया। घुड़सवार को देखकर भीखूभाई ने दुहाई दी, “ओ मेरे भाई! मुझे पेड़ पर वापिस पहुँचा दो।”

“हम्म्म।” घुड़सवार घोड़े की पीठ पर खड़ा हो गया।

हरी-हरी घास के चक्कर में घोड़ा ज़रा आगे बढ़ गया।

एक, दो और अब तीन! तीनों नारियल के पेड़ से झूलने लगे।

घुड़सवार ने पसीना-पसीना होते हुए भीखूभाई से कहा, "काका! काका! नारियल कसके पकड़े रहना। मैं आपको सौ रुपए दूँगा।"

अब ऊँटवाले की बारी थी, "मैं आपको दो सौ रुपए दूँगा।"

"तीन सौ रुपए!" भीखूभाई का सिर चकरा गया। इतना सारा पैसा! खुशी से उन्होंने अपनी दोनों बाहों को फैलाया... और नारियल गया हाथ से छूट।

धड़ाम से तीनों ज़मीन पर गिरे— घुड़सवार, ऊँटवाला और भीखूभाई। भीखूभाई अपने आप को सँभाल ही रहे थे कि एक बहुत बड़ा नारियल उनके सिर पर आ फूटा। बिल्कुल मुफ़्त!

—ममता पण्ड्या

अनुवाद – *संध्या राव*

(स्रोत— रिमझिम, कक्षा-4, एन.सी.ई.आर.टी.)

■ बातचीत के लिए

प्रश्न 1. कहानी में भीखूभाई को कंजूस कहा गया है। क्या वे सचमुच कंजूस थे? यदि हाँ, तो कैसे?

प्रश्न 2. क्या आप भीखूभाई जैसे किसी व्यक्ति को जानते हैं? उनके बारे में बताइए।

प्रश्न 3. नीचे दी गई चीज़ों को खरीदते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं और क्यों?

(क) दवाई (ख) दाल (ग) गेहूँ (घ) हरी सब्ज़ी

■ पढ़िए और बताइए

कहानी के आधार पर सही बात पर हाँ (✓) और गलत पर नहीं (×) का निशान लगाइए-

1. भीखूभाई नारियल खाना चाहते थे। हाँ ◯ नहीं ◯
2. भीखूभाई बहुत कंजूस थे। हाँ ◯ नहीं ◯
3. मंडी में नारियल का दाम तीन रुपए था। हाँ ◯ नहीं ◯
4. माली ने भीखूभाई की मदद की। हाँ ◯ नहीं ◯
5. पेड़ पर नारियल से तीन लोग लटके हुए थे। हाँ ◯ नहीं ◯

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ कंजूस होने और सोच-समझकर पैसा खर्च करने पर चर्चा करें। अक्सर दुकानों पर सेल लगती है और चीज़ों पर छूट मिलती है। क्या यह छूट या सेल वाला सामान उपयोग के योग्य होगा? सेल के बारे में सहभागियों को अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें।

© NCERT

■ पढ़िए, बताइए और लिखिए

प्रश्न 1.नारियल के बगीचे से लेकर बाज़ार तक आते-आते नारियल के दाम बढ़ जाते हैं। ऐसा क्यों होता है?

प्रश्न 2.कोई सामान बेचते या खरीदते समय आपको कौन-कौन सी परेशानियाँ आती हैं?

प्रश्न 3. आपके बाज़ार में ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप खरीद पाते हैं? ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो आप नहीं खरीद पाते? कारण बताइए-

खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	न खरीदी जा सकने वाली चीज़ें	कारण

© NCERT

प्रश्न 4. भीखू भाई तो खुशी से फूले न समाए। आपके जीवन में खुशी के पल कौन-से होते हैं? बताइए और लिखिए-

_____

_____

_____

प्रश्न 5. अपनी-अपनी समझ से वाक्य पूरे कीजिए-

(क) तभी ऊँट पर _____ एक आदमी वहाँ से गुज़रा।

(ख) भीखूभाई के दोनों _____ हवा में झूलते रह गए।

(ग) उसी समय ऊँट को हरे _____ पत्ते नज़र आए।

(घ) तीनों _____ से ज़मीन पर गिर पड़े।

प्रश्न 6. इस कहानी में संख्याओं का शब्दों में प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है? अंको में लिखिए।

जैसे-

एक नारियल	**=**	**1 नारियल**
पचास पैसे	=	50 पैसे
_____	=	_____
_____	=	_____
_____	=	_____

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से महँगाई के बारे में चर्चा करें। पिछले कुछ समय में कौन-कौन सी चीज़ें महँगी हो गई हैं? ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जिनके महँगे हो जाने पर आपको कोई फर्क नहीं पड़ता? एम.आर.पी., रिटेल, थोक आदि शब्दों की समझ पर भी चर्चा करें।

CNCL NCERT

■ मिलकर पढ़िए

'ददरिया' गीत

यह एक आदिवासी लोकगीत है। यह गीत गोंड समुदाय द्वारा सावन-भादों के मौसम में खेतों में काम करते हुए गाया जाता है। इसकी भाषा में छत्तीसगढ़ी और हिंदी का मिश्रण है। इस 'ददरिया' गीत में गूलर के पेड़ वाले खेत में नगरिया हल चलाने वाले और निदैइया– निदाई करने वाली महिला के बीच संवाद चल रहा है। वे दोनों संध्या समय में साथ जाने की बात कर रहे हैं। नगरिया कहता है, "निदैइया तुम्हारे गाने की आवाज़ नहीं आ रही, साथ में गाना गाओ। हम संध्या समय घर साथ जाएँगे।" निदैइया कहती है, "आम तोड़कर खाने के लिए बुलाया था पर आपने धोखा दिया।" नगरिया कहता है, "साथ में मिलकर गीत गाओ संध्या समय घर साथ जाएँगे।"

'ददरिया' लोक-गीत

नगरिया – उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं त नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबीरे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – गावइया गादी वइसै गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नगरिया – नई आवै बइया तुम्हारो आरो बइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – आमाला टोरौं खाहुँच कहि के मोला दागा माँ भुलवाए, अहुँच कहिके वैसे गाले एइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नए शब्दों के अर्थ जानिए

1. नगरिया – हलवाला (पुरुष), 2. निदैइया – निदाई करने वाली महिला, 3. डूमर – गूलर का पेड़, 4. मोला – मुझे, 5. आमाला – आम, 6. खाहुँच – खाने के लिए, 7. दागा – धोखा, 8. भुलवाए – बुलवाया, 9. आरो – आवाज़

खेत के मेड़ में डूमर के पेड़ लगे हैं, इसलिए उस खेत का नाम डूमर वाले खेत पड़ा।

मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'मनोरंजन' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'शाम' के लिए 'संझा' आदि। सहभागियों के साथ मिलकर गीत, भजन, लोकगीत गाएँ।

बातचीत के लिए

1. आपके यहाँ लोकगीत किन अवसरों पर गाए जाते हैं?
2. क्या आपको कोई लोकगीत याद है? यदि हाँ, तो सुनाइए।

मिलकर पढ़िए और बातचीत कीजिए

जादुई लालटेन

सिनेमा संसार भर में फैला हुआ है। सिनेमा का अपना संसार है। तीन घंटे के शो में हज़ारों लोग एक साथ रहते हैं। दीन-मज़हब, जात-पात, अमीरी-गरीबी, सब भेद-भाव भूलकर साथ-साथ हँसते-रोते, खुश होते, मज़ा लेते, सोचते-समझते हैं।

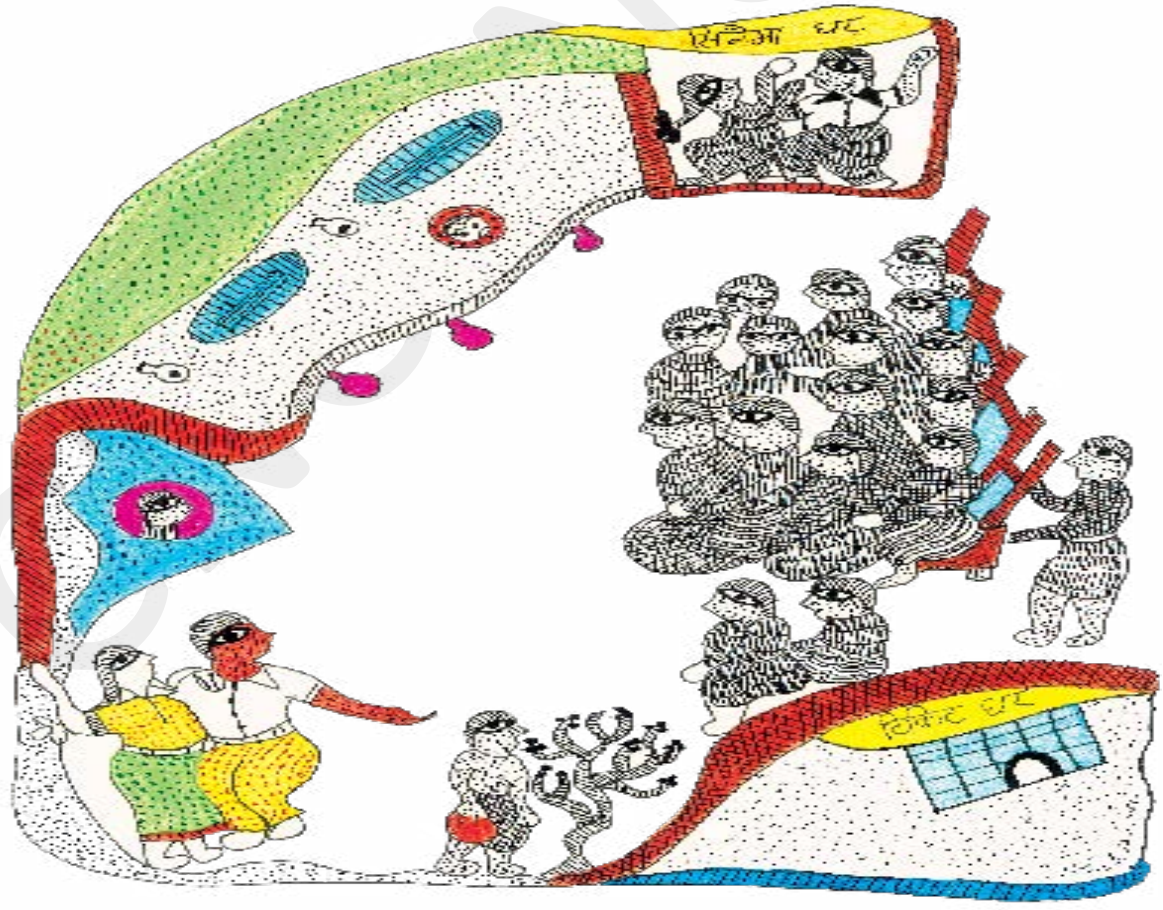

भारत जैसे बड़े देश में सिनेमा की बहुत बड़ी भूमिका है जो देश और समाज को जोड़ने का काम करता है। हिंदी में बनी फ़िल्में केवल हिंदी इलाके में ही सराही नहीं जातीं। दक्षिण भारत में भी उन्हें बड़े चाव से देखा जाता है। हिंदी सिनेमा में दक्षिण की गैर हिंदी फिल्मों की धुनें और गीत-संगीत मशहूर हो रहे हैं। सिनेमा को चलचित्र भी कहते हैं। सिनेमा को जादुई लालटेन भी कहा गया है। अगले सौ साल में इसकी लौ और ऊँची, और मोहक, और साफ़ हो— हम यह कामना करते हैं।

— प्रेम रंजन अनिमेष

(स्रोत— सौ साल का सिनेमा)

CNCL NCERT